ग्रामीण महिला और प्रौद्योगिकी

Neera Yadav[1]*, Dr. Purnima Srivastva[2]

[1] Research Scholar, OPJS University

[2] Phd Guide, Department Home Science, OPJS University

सार - तकनीकी प्रगति ने ग्रामीण महिलाओं को लाभान्वित किया है , विभिन्न प्रौद्योगिकी की लागत और लाभों की पहचान से शोधकर्ताओं, विस्तार कार्यकर्ताओं और महिलाओं के कारणों के प्रवर्तकों , योजनाकारों और नीति निर्माताओं को ग्रामीण महिलाओं के लिए उपयुक्त तकनीक विकसित करने और प्रचारित करने में मदद मिलेगी जो श्रम विस्थापन के बजाय श्रम का उपयोग करेगी और जो पूरी तरह से मिश्रित होगी। क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ। इसके अलावा, खेत, घर, स्वास्थ्य और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सुविधाकर्ताओं और बाधाओं की पहचान से नीतिगत निहितार्थों वाली जानकारी का खजाना मिलेगा।

कीवर्ड - ग्रामीण महिला, प्रौद्योगिकी, स्थिति, सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक

---------------------------------x---------------------------------

परिचय

हाल के दशकों में समय-समय पर नई तकनीकी प्रगति और उनके प्रसार ने मानव अस्तित्व और सामाजिक व्यवस्था के साथ-साथ पहले से अज्ञात बड़े पैमाने पर पर्यावरण को बदलने की विशाल शक्ति का प्रदर्शन किया है। जनसंख्या के विभिन्न क्षेत्रों पर लाभकारी और हानिकारक प्रभाव महसूस किए गए हैं। लेकिन प्रौद्योगिकी , अगर इसे मानव उत्पादन को अधिकतम करना है तो लिंग तटस्थ होना चाहिए। (1) जिस प्रकार हम मानव संसाधन के 50 प्रतिशत की उपेक्षा करके विकास की प्रक्रिया में महिलाओं को पुरुषों के साथ समान भागीदार के रूप में शामिल नहीं करते हैं , उसी प्रकार प्रौद्योगिकी, यदि यह आधी उत्पादक शक्ति का भेदभाव करती है, तो विकास को गति नहीं दे पाएगी। एक विकासशील देश की संसाधन विकास प्रक्रिया , अपेक्षा के अनुरूप। बल्कि यह कुछ मुद्दों को उठा सकता है, जो विकास की गति को बाधित कर सकता है। भारतीय उपमहाद्वीप और अन्य विकासशील देशों में यही हुआ है जहां पुरुषों और महिलाओं के बीच प्रौद्योगिकी का लाभ समान रूप से वितरित नहीं किया गया है, विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं के संबंध में जो हमेशा उत्पादक के मामले में पुरुषों के बराबर से अधिक भागीदार रही हैं। खेतों पर काम करो। महिलाएं राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण मानव संसाधन बनाती हैं। उन्हें हर राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के विकास और वृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में लिया जाना चाहिए। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति समय-समय पर बदलती रही है। सैद्धांतिक रूप से महिलाओं की स्थिति को हमेशा उच्च माना गया है और उन्हें दुर्गा , लक्ष्मी, सरस्वती आदि के रूप में भगवान के रूप में वर्णित किया गया है। इस प्रकार महिलाओं को शक्ति , ज्ञान और धन का प्रतीक माना गया है। (2)

ग्रामीण महिलाएं और कृषि प्रौद्योगिकी

कई अनुभवजन्य अध्ययनों से पता चला है कि फार्म मशीनीकरण के लाभ ग्रामीण महिलाओं तक नहीं पहुंचे हैं। खेती के मशीनीकरण के परिणामस्वरूप वे या तो हाशिए पर या कंगाल हो गए हैं और उन्हें रोजगार से बाहर कर दिया गया है जिससे उनकी काम की स्थिति कम हो गई है। महिलाओं को अधिक से अधिक कठिन , नीरस और समय और ऊर्जा की खपत करने वाले कृषि कार्यों में स्थानांतरित कर दिया गया है। काम करने की अनुचित मुद्राएं (लंबे समय तक झुकना आदि) , लंबे समय तक काम करने की समय-सारणी और काम करने की कठिन परिस्थितियों में आराम या आराम के लिए बहुत कम या बिल्कुल समय नहीं बचा है और ग्रामीण महिलाओं के कल्याण के लिए हानिकारक साबित हुए हैं। (3)

www.ignited.in

ग्रामीण महिलाएं और घरेलू प्रौद्योगिकी

भुगतान किए गए काम के अलावा, ग्रामीण महिलाएं घर के अंदर और बाहर कई कामों के लिए जिम्मेदार होती हैं। ग्रामीण महिलाओं के समय के उपयोग के पैटर्न पर किए गए अध्ययनों से पता चला है कि महिलाएं प्रतिदिन 10-15 घंटे विभिन्न घरेलू कामों, पानी और ईंधन संग्रह, जानवरों की देखभाल, फसल काटने से पहले, फसल और कटाई के बाद के काम में खर्च करती हैं। ये ऊर्जा इनपुट शारीरिक रूप से व्यवहार्य से अधिक कार्य कर रहे हैं और जीवन निर्वाह के निम्न स्तर के लिए ग्रामीण महिलाओं की दुर्दशा और कठिन परिश्रम की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में धुआं रहित चूल्हे, पानी खींचने के लिए हैंडपंप, बिजली के दूध के चूल्हे और अन्य समय और श्रम संरक्षण उपकरणों जैसी सरल तकनीक को कितना अपनाया गया है, यह अभी तक शोध के अधीन है। यदि प्रौद्योगिकी को अपनाया जाता है, तो किस हद तक ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न घरेलू, खेत और आर्थिक रूप से विस्तारित गतिविधियों को करने में उनके समय और ऊर्जा व्यय को कम करके काम के कठिन परिश्रम से राहत मिली है? क्या प्रौद्योगिकी के माध्यम से उत्पन्न होने वाले लाभ रखरखाव और देखभाल की इन शर्तों के लागत घटकों से अधिक हैं? कुछ एर्गोनोमिक अध्ययनों को छोड़कर, जो प्रयोगशाला परिस्थितियों में किए गए हैं, इन मुद्दों के संबंध में बहुत अधिक विश्लेषणात्मक कार्य नहीं किया गया है। इसलिए ग्रामीण महिलाओं के विशेष संदर्भ में उपरोक्त मुद्दों का समालोचनात्मक विश्लेषण करने की आवश्यकता है। (4)

ग्रामीण महिलाएं और स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी

काम से संबंधित प्रौद्योगिकी के अलावा, यह स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति है जो जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करेगी क्योंकि महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति उनकी उत्पादकता को प्रभावित करती है और इस तरह समाज और विकास में उनकी भूमिका को प्रभावित करती है। ग्रामीण महिलाओं के मामले में यह विशेष रूप से इसलिए है क्योंकि समाज में प्रचलित कई सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों के कारण, विशेष रूप से "दो बेटे सिंड्रोम", वे लगातार गर्भधारण के अधीन हैं। भारत सरकार, बढ़ती जनसंख्या की खतरनाक दर की जांच करने के लिए, 1952 से "परिवार नियोजन कार्यक्रम" के लिए जोरदार अभियान चला रही है। वर्षों से तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप, आईयूडीएस, मौखिक गोलियां जैसे जन्म नियंत्रण के विभिन्न तरीके कंडोम, नसबंदी आदि को लगातार लोकप्रिय बनाया जा रहा है। (5) लेकिन देश की चौंका देने वाली आबादी यानी 843 मिलियन यह सवाल उठाती है कि इतने वर्षों के बाद भी परिवार नियोजन गति और स्वीकृति को प्राप्त करने में विफल क्यों रहा है? क्या यह सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों के कारण है कि महिलाओं को लगातार प्रजनन श्रम के अधीन किया जा रहा है? स्वास्थ्य देखभाल के उपयोग पर अध्ययन निरपवाद रूप से दिखाते हैं कि महिलाओं की उच्च रुग्णता के बावजूद पुरुषों की तुलना में बहुत कम महिलाएं मौजूदा स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का उपयोग करती हैं।

ग्रामीण महिला और संचार प्रौद्योगिकी

महिलाओं की निम्न स्थिति, उच्च प्रजनन क्षमता और निरक्षरता को विभिन्न अनुभवजन्य अध्ययनों द्वारा सहसंबद्ध चर के रूप में प्रमाणित किया गया है। यहां ग्रामीण महिलाओं के मानसिक अलगाव को तोड़ने में संचार प्रौद्योगिकी की प्रमुख भूमिका है। संचार प्रौद्योगिकी में प्रगति बहुत अधिक हुई है और इसने हरियाणा और पंजाब के प्रगतिशील राज्यों के ग्रामीण परिवारों में भी पैठ बनाई है। ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीविजन सेट एक आम दृश्य बन गया है। ग्रामीण बाजारों के एक अध्ययन के अनुसार 20 प्रतिशत से अधिक रंगीन टेलीविजन सेट ग्रामीण बाजारों में बेचे जाते हैं। दूरदर्शन पर परिवार नियोजन, व्यभिचार आदि पर अनेक शिक्षाप्रद कार्यक्रम दिखाए जा रहे हैं, जिनका एक मुख्य उद्देश्य महिलाओं की स्थिति, स्थिति और छवि में सुधार करना है। यह मास मीडिया तकनीक 8 विस्तार कर्मियों के साथ संचार का एक दुर्जेय चैनल बनाती है। लेकिन क्या वे लक्ष्य समूह तक पहुँचते हैं? यदि हां, तो क्या उनका कोई प्रभाव पड़ता है? क्या वे केवल खेती करने वाले परिवारों तक ही सीमित हैं? इस क्षेत्र में भी महिलाओं के दृष्टिकोण से बहुत कुछ अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। (6)

तकनीकी परिवर्तन और ग्रामीण महिलाएं

ग्रामीण संदर्भ में, प्रौद्योगिकी का तात्पर्य उन परिवर्तनों से है जो विकास के परिणामस्वरूप हुए हैं। मुख्य रूप से ये परिवर्तन कृषि से संबंधित हैं। "हरित क्रांति", 1960 के दशक की एक घटना विकासशील देशों में कृषि के आधुनिकीकरण में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। महत्वपूर्ण परिवर्तनों की ओर ले जाने वाली कृषि तकनीक तीन प्रमुख प्रकार की थी, कृषि में जैविक नवाचार जैसे उन्नत बीज किस्मों से उत्पादन में वृद्धि हुई; रासायनिक नवाचार जैसे कि उर्वरक, कीटनाशक और कीटनाशक

www.ignited.in

उत्पादन को बढ़ावा देने और उत्पादन हानि को कम करने और यांत्रिक नवाचार, जो बहु फसल, समय पर सिंचाई और त्वरित थ्रेशिंग के लिए तेजी से बीज-क्यारी तैयार करने में मदद करते हैं। (7)

तकनीकी परिवर्तनों की तेज़ी ने समाज और अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन लाए। जहां भी कृषि में तकनीकी प्रगति हुई, लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में सहवर्ती परिवर्तन हुए, उत्पादन लाभ, आय में वृद्धि , कृषि रोजगार में कमी , कृषि संबंधों में बदलाव , निवेश पैटर्न में बदलाव , व्यवसाय में बदलाव, शिक्षा में सुधार , स्वास्थ्य, जीवन शैली और पसंद है। यह विकास , मुख्य रूप से तकनीकी सफलता के माध्यम से, राज्य को वृहद स्तर पर लाभान्वित कर सकता था। इससे घरेलू उप-प्रणाली को भी लाभ हो सकता था। लेकिन जब घरेलू उप-प्रणाली के व्यक्तिगत सदस्यों और विशेष रूप से ग्रामीण गृह निर्माता की बात आती है, तो इस मुद्दे पर बारीकी से जांच की जरूरत है। (8)

प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण

सशक्तिकरण एक व्यक्ति की अपनी पसंद का प्रयोग करने की शक्ति प्राप्त करने की क्षमता को संदर्भित करता है , स्वतंत्र रूप से कार्य करता है और समाज के समान सदस्यों के रूप में अपनी क्षमता को पूरा करता है। भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार , "सशक्तिकरण का अर्थ है मजबूर शक्तिहीनता की स्थिति से एक शक्ति की स्थिति में जाना"। इस प्रकार, महिलाओं का सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से महिलाएं भौतिक और बौद्धिक संसाधनों पर अधिक शक्ति प्राप्त करती हैं , पितृसत्ता की विचारधारा और समाज की संस्थाओं में उनके खिलाफ मौजूदा लिंग आधारित भेदभाव का सामना करती हैं। सशक्तिकरण शब्द का अर्थ है शक्ति देना। यह आय पर नियंत्रण और घर , समाज और राष्ट्र में निर्णय लेने की शक्ति की भी व्याख्या करता है। (9)

नई आर्थिक व्यवस्था में मानव संसाधन और प्रौद्योगिकी विकास के दो महत्वपूर्ण कारक हैं। अर्थव्यवस्था में इन दो कारकों को सक्रिय करने के लिए उद्यमिता विकास आवश्यक है। विभिन्न राष्ट्रों में किए गए विभिन्न शोध अध्ययनों में उद्यमिता और आर्थिक विकास को सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध चर के रूप में पाया गया है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि को काफी हद तक उनकी उद्यमशीलता के विकास के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। महिलाओं के बीच उद्यमिता विकास को महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के संभावित दृष्टिकोण के रूप में माना जा सकता है। इसके अलावा , विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों में महिला उद्यमिता की वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक रही है। दशकों से संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य विकसित देशों में महिला उद्यमिता लगातार बढ़ रही है। महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्यमों ने संयुक्त राज्य में लगभग 27.5 मिलियन लोगों को रोजगार देने वाली लगभग चालीस प्रतिशत व्यावसायिक फर्मों का प्रतिनिधित्व किया। यह देखा गया है कि महिलाओं ने पुरुषों की तुलना में पुरुषों की संख्या दोगुनी कर दी है , खासकर जब हाल के वर्षों में चीन में नए व्यवसाय शुरू करने की बात आती है। वर्तमान में , पाँच मिलियन से अधिक महिला उद्यमी हैं जो चीन में सभी उद्यमियों में से एक चौथाई हैं। लैटिन अमेरिका में, महिलाएं सभी नियोक्ताओं का पंद्रह से बीस प्रतिशत हिस्सा हैं , जो बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक और सेवा क्षेत्रों में केंद्रित हैं। कनाडा में , 1989 से 2004 तक स्वरोजगार करने वाली महिलाओं की संख्या में पचास प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

महिला अधिकारिता के संकेतक

भारत में सदियों और भौगोलिक सीमाओं से परे समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महिलाओं की भूमिका कई बदलावों से गुजरी है। महिलाओं की भूमिका को वर्तमान दिशा में आगे बढ़ने में सदियों लग गए। कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ महिलाएँ एक बर्बर युग में रहती हैं , सामाजिक वर्जनाओं और प्रतिबंधों से जंजीरों में जकड़ी हुई हैं। साथ ही ऐसे अन्य क्षेत्र भी हैं जहां महिलाएं स्वतंत्रता के लिए लड़ती हैं और जीतती हैं और नए व्यवसायों और जीवन के नए तरीके के साथ एक नए संदर्भ में अपनी भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त करती हैं। जहाँ तक भारत के प्राचीन उद्योगों का संबंध है , परिवार उत्पादन की इकाई थी जहाँ महिलाओं ने उत्पादन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। (10) मोहनजोदड़ो और हड़प्पा संस्कृति में भी, महिलाओं ने पुरुषों के साथ एक जिम्मेदार स्थिति साझा की और कताई और क्ले मॉडलिंग और अन्य सरल कला और शिल्प में मदद की। वैदिक काल में महिलाओं ने घर की उपयोगिता आवश्यकताओं और कृषि गतिविधियों और बुनाई में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पारंपरिक अर्थव्यवस्था में , उन्होंने कृषि, उद्योग और सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे मादक सोम-रस, एक कुशल कार्य के निर्माता थे। 18वीं शताब्दी में ,

महिलाओं की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका थी और सामाजिक संरचना में एक निश्चित स्थिति थी।

विकास में महिला प्रौद्योगिकी की अवधारणा

शब्द 'उद्यमी' फ्रांसीसी शब्द "एंटरप्रेन्ड्रे" (उपक्रम करने के लिए) से विकसित हुआ है। यह उन व्यक्तियों पर लागू किया गया था जो 16वीं शताब्दी की शुरुआत में सैन्य अभियानों में शामिल थे और 17वीं शताब्दी में निर्माण और सिविल इंजीनियरिंग गतिविधियों को कवर करने के लिए विस्तारित हुए थे। 18वीं शताब्दी के दौरान 'उद्यमी' शब्द का प्रयोग आर्थिक गतिविधियों के लिए किया जाता था। 1933 में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने उद्यमी को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया "जो एक उद्यम करता है, विशेष रूप से एक ठेकेदार पूंजी और श्रम के बीच मध्यस्थ के रूप में। एक उद्यम का उपक्रम करना उद्यमिता है, और जो इसे चलाता है- जो उत्पादन के उद्देश्य से पूंजी और श्रम को जोड़ता है, वह एक उद्यमी है"।

भारत में महिला उद्यमिता का विकास

स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की स्थिति में सुधार की आवश्यकता महसूस की गई और इसके लिए भारत सरकार ने विभिन्न उपाय किए, जिनमें संवैधानिक अधिकार, कानूनी/राजनीतिक अधिकार, श्रम विधायिका, बेहतर कामकाजी स्थिति, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन सम्मेलन, व्यावसायिक प्रशिक्षण शामिल हैं। महिलाओं के लिए समान काम के लिए समान वेतन सुनिश्चित करना, महिलाओं को महिला संगठनों और स्वैच्छिक एजेंसियों को बनाने में मदद करना जो सूक्ष्म महिला उद्यमियों की सहायता और सहायता करते हैं। महिला उद्यमियों की स्थिति को बढ़ाने के लिए उद्यम में प्रगति के पक्ष में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। महिला उद्यमियों को प्रशिक्षित करने के लिए एक अलग प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया था। (11)

महिलाओं ने व्यावसायिक गतिविधियों में प्रवेश करना शुरू किया और उद्यमिता को अपने आर्थिक उत्थान के लिए एक लाभदायक विकल्प के रूप में लेना शुरू किया। नई औद्योगिक नीति में शहरी के साथ-साथ शहरी क्षेत्र में महिलाओं के लिए उद्यमशीलता कार्यक्रम को लागू करने और सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में उनकी स्थिति को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। तत्पश्चात् प्रशिक्षण सहायता देकर व्यावसायिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए उत्पाद एवं प्रक्रिया पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं। लघु उद्योग विकास संगठन ने महिला उद्यमियों के प्रोत्साहन और विकास के लिए 1971 और 1985 के बीच लगभग 8100 कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

ग्रामीण महिला परिवार संसाधन विकास और उद्यमिता

"वास्तविक भारत ग्रामीण भारत है"। भारत में ग्रामीण महिलाएँ कुल महिला जनसंख्या का लगभग 77 प्रतिशत हैं। वे घरेलू गतिविधियों के अलावा कृषि, संबद्ध क्षेत्रीय और कलात्मक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लगभग उनहत्तर प्रतिशत ग्रामीण महिला श्रमिक कृषक और मजदूरों के रूप में कृषि संबंधी गतिविधियों में शामिल हैं। भारत में ग्रामीण समाज में खेत और घर अभिन्न अंग हैं, और फार्म गृहिणी अक्सर निर्माता, उद्यमी, कार्यकर्ता, उपभोक्ता और गृह निर्माता के रूप में कई भूमिकाएँ निभाती हैं। महिलाओं के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत बाधाओं को दूर करना, सूचना प्रवाह को बढ़ाना, ऋण तक पहुंच प्रदान करना, कौशल विकास कार्यक्रम, व्यापार सहायता सेवाएं, तकनीकी और व्यवसाय सहायता सेवाएं और विपणन आवश्यक है।

भारत कृषि आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था है और कुल आबादी का लगभग साठ प्रतिशत अभी भी गांवों में है। गांव भारत का दिल हैं। भारत का तीव्र विकास ग्रामीण क्षेत्र के विकास पर निर्भर करता है। अधिकांश ग्रामीण लोग कृषि भूमि पर प्रच्छन्न रूप से कार्यरत हैं और अधिकांश समय वे कृषि गतिविधियों के अलावा अन्य गतिविधियों में स्थानांतरित होने के लिए अनिच्छुक हैं। इन गरीब लोगों में महिलाएं दोहरे उत्पीड़न के कारण सबसे ज्यादा पीड़ित हैं। 14 पिछड़े क्षेत्रों में उद्यमशीलता के विकास को भारत में आर्थिक नियोजन की एक बुनियादी रणनीति के रूप में अपनाया गया है। पिछड़े क्षेत्रों में, उद्यमी, जिनमें से अधिकांश पहली पीढ़ी के उद्यमी हैं, कई समस्याओं का सामना करते हैं जैसे वित्त की कमी, कच्चे माल की कमी, बाजार कवरेज की कमी, तकनीकी और प्रबंधकीय कौशल की कमी, अनुचित परियोजना योजना, बिजली की कमी और परीक्षण सुविधाओं की कमी। स्थानीय लोगों में उद्यमिता का अभाव मुख्य रूप से जोखिम लेने की क्षमता की कमी, व्यावसायिक अनुभव की कमी, उद्योगों की स्थापना के लिए उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं और प्रोत्साहनों की अज्ञानता, योग्यता और आवश्यक प्रेरणा की कमी के कारण है। पिछड़े क्षेत्रों में उद्यमशीलता के विकास में बुनियादी सुविधाओं की कमी मुख्य बाधा है। पिछड़े क्षेत्रों में उद्यमशीलता के विकास को समन्वित और सक्रिय

www.ignited.in

करने के लिए एक गतिशील संगठनात्मक बुनियादी ढांचा एक बुनियादी शर्त है। **(12)** सरकारी एजेंसियां और वित्तीय संस्थान अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब उद्यमियों को रूपांतरण दरों पर भूमि **,** बिजली**,** कच्चे माल और वित्त जैसी आवश्यक ढांचागत सुविधाएं प्रदान करते हैं। इन गरीब ग्रामीण लोगों में महिलाएं दोहरे उत्पीड़न का शिकार होने के कारण सबसे ज्यादा पीड़ित हैं।

निष्कर्ष

विकास प्रक्रिया में एक आयाम के रूप में महिला और प्रौद्योगिकी तब तक उपेक्षित और अनछुए क्षेत्र बने रहे, जब तक कि यह विषय सामाजिक शोध के एक मद के रूप में महत्वपूर्ण नहीं हो गया। खेत और घर के अंदर महिलाओं के काम की सीमा और महत्व का दस्तावेजीकरण करने वाले अध्ययनों का वस्तुतः एक वैश्विक विस्फोट हुआ है। हालांकि घरेलू, स्वास्थ्य, कृषि और संचार के क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी के आगमन और उपयोग को अनुभवजन्य रूप से सिद्ध किया गया है , फिर भी लागत और लाभ के संदर्भ में इस प्रौद्योगिकी के प्रभाव पर एक समग्र तस्वीर उभरने में विफल रही है। संचार और स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी में विकास के कारण ग्रामीण आबादी का बेहतर स्वास्थ्य चाहने वाला व्यवहार आदि अनुत्तरित रह गए हैं , जो स्वाभाविक रूप से परिवार संसाधन प्रबंधन विशेषज्ञों के लिए अनुसंधान संबंधी चिंता का क्षेत्र है।

संदर्भ

1. शान रचना , (2015), "महिला उद्यमिता विकास और अधिकारिता का एक विनकुलम" , बालानी रोहित और वर्मा रत्न , "भारत में महिला आर्थिक अधिकारिता", अध्ययन प्रकाशक और वितरक , नई दिल्ली
2. बलयानी रोहित और वर्मा रत्न , (2015), "वीमेन्स इकोनॉमिक एम्पावरमेंट इन इंडिया" , अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
3. हाशमी इरम, बलयानी रोहित, (2015), "भारत में उद्यमिता के माध्यम से ग्रामीण महिला सशक्तिकरण: समस्याएं और समाधान" , बलयानी रोहित और वर्मा रत्न , "भारत में महिला आर्थिक अधिकारिता", अध्ययन प्रकाशक और वितरक , नई दिल्ली
4. सिंह साहब , ठाकुर गौरव और गुप्ता पी.सी. , (2013), "ए केस स्टडी ऑन एम्पावरमेंट ऑफ़ रूरल वीमेन थ्रू माइक्रो एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट" , जर्नल ऑफ़ बिज़नेस एंड मैनेजमेंट , वॉल्यूम 9, अंक 6, पीपी। 123-126।
5. बाटलीवाला श्रीलता , (2013), "इमर्जिंग विद एम्पावरमेंट- एन इंटेलेक्चुअल एंड एक्सपेरिमेंटल जर्नी", वीमेन अनलिमिटेड (एन एसोसिएशन ऑफ काली फॉर वीमेन), नई दिल्ली।
6. अरावटिया अमित मिनी और मील पंकज , (2012), "सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और भारत में महिला अधिकारिता" , कंप्यूटर इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (इजरसेट) वॉल्यूम 1, अंक 8, पीपी। 99-104।
7. बृंदा कल्याणी. पी आर और कुमार दिलीप एम (2011), "प्रेरक कारक , उद्यमिता और शिक्षा: एसएमई में महिलाओं के संदर्भ में अध्ययन" , मनोविज्ञान और व्यवसाय के सुदूर पूर्व जर्नल , खंड 3, संख्या 3, पीपी। 14-35।
8. भारत सरकार (2014) 'महिला श्रम 2012-2013 पर सांख्यिकीय प्रोफ़ाइल ', श्रम ब्यूरो श्रम और रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार।
9. भारत सरकार (2012) 'महिला श्रम 2009-2011 पर सांख्यिकीय प्रोफ़ाइल ', श्रम ब्यूरो श्रम और रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार।
10. दास, जे.के. (2014) 'इनकम एंड लाइवलीहुड जनरेशन के माध्यम से कृषि महिलाओं को सशक्त बनाना', जैव-संसाधन और तनाव प्रबंधन का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 5(1), पीपी. 74-77.
11. देबनारायण, एस. (2006) 'डेवलपमेंट थ्योरी एंड जेंडरेड अप्रोच टू डेवलपमेंट: सम थ्योरिटिकल इश्यूज इन द थर्ड वर्ल्ड्स पर्सपेक्टिव'.
12. कृष्णराज, एम. और ए. कांची (2008) 'भारत की महिला किसान', नेशनल बुक ट्रस्ट।

Corresponding Author

Neera Yadav*

Research Scholar, OPJS University

www.ignited.in